पहाड़ पर विकास के नाम पर गडकरी की सड़क लूट!

सती

29 अगस्त को जोशीमठ से गोपेश्वर जाना था ! 30 को द्वारहाट में स्वर्गीय विपिन त्रिपाठी की वार्षिकी में शामिल होना था ! वहाँ से आगे हल्द्वानी जाना था !गोपेश्वर से साथी इन्द्रेश के साथ जाना था ,हल्द्वानी तक ही ! सो ये तय हुआ कि रात के लिए गोपेश्वर आ जांय फिर वहाँ से सुबह सवेरे निकलेंगे तो समय पर पहुँच जायेंगे ! जब रात रहने जाना था तो सोचा आराम से निकलें ,शाम तक पता किया कि रास्ता कैसा है सबने कहा आज खुला है ! पूछा क्षेत्रपाल के क्या हाल हैं , तो कहा गया ठीक है, बारिश भी नहीं थी तो इत्मीनान था ! साढ़े चार बजे के करीब जोशीमठ से बिटिया संग निकला ! रास्ते भर ये कहते चले कि किसी तरह क्षेत्रपाल पार हो जाए ! क्योंकि लगातार वहाँ रास्ता बंद हो रहा है . लोग घंटों वहाँ फंस रहे हैं ! कहा जा रहा लामबगड़ सिरोबगड़ के बाद ये तीसरा नासूर खोद डाला गया है !

किसी तरह पीपलकोटी पार किया क्योंकि सारा रास्ता ही गढों से पटा है ! अब क्षेत्रपाल कुछ ही फासले पर था , तभी छिनका के पास क्षेत्रपाल से दो तीन किलोमीटर पहले जाम लग गया ! रास्ता यहाँ भी बुरी हालत में है आधा घंटा इसे खुलने में लगा! अब ज्यों ही छिनका से चले अचानक तेज मूसलाधार बारिश शुरू , तभी लगा अब कुछ होकर रहेगा , क्षेत्रपाल पहुंचे तो बारिश उसी रफ्तार से जारी थी , हमसे आगे की गाड़ियां बड़ी बड़ी पार हो गईं। मलवा खिसक ही रहा था , ये हुआ कि पार कर जायेंगे, तभी हमसे आगे चल रही सिलेंडर ले जा रही यूटिलिटी रुकी देखा तो उसके आगे एक गाडी ने उधर से आकर रास्ता रोक लिया। उसके पीछे हटने में एक मिनट लगा होगा इतने में मलवा सरक कर सड़क तक बहने लगा। यूटिलिटी पार हुई और जैसे ही हम आगे बढ़े मलवे में गाडी धंसने लगी , ऊपर से पत्थर मलवा लगातार बह कर आ रहा और हम बीच में , गाडी जितना आगे पीछे करें वो और धंसती जाय , बिटिया को कहा तू उतर , उसने धक्का देने की कोशिश की पर ..,एक लडका जो रास्ता पार कर रहा था उससे मिन्नत की , उसने कहा मरना है क्या, जिस गाडी की वजह से रास्ता रुका उनके पास दौड कर गया पर सबको जान की परवाह थी!

किसी तरह कीचड़ मलवा पार कर सड़क के दूसरी तरफ जान बचा कर भागे, ऊपर से पत्थर मलवा लगातार नीचे आ रहा था . अँधेरे ने और मुश्किल कर दी थी. हमारी गाडी की हालत देख कर बाकी पीछे वाले दूर रुक गये थे , इस तरफ भी गाड़ियों का काफिला खड़ा हो गया था .

इतने में किसी ने आवाज़ सी, अरे एसडीम साहब उधर गाडी में हैं उनसे मिल लो ! संयोग से जोशीमठ एसडीम गोपेश्वर से आ रहे थे ! अन्धेरा होने के कारण व देर होने से सड़क का काम करने वाले उस वक्त काम करने को तैय्यार नहीं थे! बहुत मिन्नत करने व जोशीमठ उपजिलाधिकारी के बड़े दवाब के बाद वो पहुंचे और इस झल्लाहट में कि इतनी देर में बुलाया गया गाडी को जे सी बी की ब्लेड से धकिया कर निकलवाया। जिससे गाडी तो निकली पर आधी डैमेज होकर ..शीशा आदि चूर कर ! फिर लोगों ने कहा भाई शाब ये तो (सड़क निर्माण करने वाले) किसी की सुन ही नहीं रहे डी,एम की भी नहीं , शुक्र मनाओ इस टैम आ भी गये!

यह घटना किसी के साथ भी कभी भी घटित हो सकती है . जिस तरह पहाड़ काटा जा रहा वो आने वाले कई वर्षों के लिए पहाड़ को अस्थिर कर देगा ! बहुत सी जगहों पर पहाड़ बहुत कच्चा व कमजोर है और पेड़ों की अन्धादुन्ध कटाई ने, जो कि अभी ही सड़क निर्माण के लिए काटे गये हैं ,ने इसे और कमजोर किया है ! जहां जहां पेड़ों के कटने से मिट्टी ढीली पड़ी है वहाँ इस बरसात ने जबर्दस्त कटाव किया है ! पहाड़ से दरक रही मिट्टी व लुढक रहे पत्थर सड़क की दूर तक की कटिंग में घाव से किये नजर आ रहे हैं ! जगह जगह बड़े बोल्डर कहीं से भी कभी भी लुढक पड़ते हैं या लुढकने को तैयार से हैं ! कई मर्तबा बड़ी दुर्घटनाएं इसकी वजह से हो चुकी हैं ! सड़क हादसे में पिछले सालों में देखें तो ऊपर से गिरे मलबे और पत्थर बड़ी वजह बने हैं ! इन हादसों में गयी जान से ज्यादा दर्दनाक व दुर्भायपूर्ण कुछ नहीं हो सकता ! किन्तु यही दुर्घटनाएं सबसे ज्यादा उपेक्षित रहती हैं ! सड़क कटिंग के दौरान ही ऐसी दुर्घटनाएं हाल में हो चुकी हैं !

विकास के पैमाने पर सड़क यातायात सर्वप्रमुख रूप में सबसे ऊपर है ! विकास के इसी पैमाने के आधार पर यह सड़क (राजमार्ग 58)पिछले कई सालों से बस बनती ही चली जाती है पर पूरी नहीं होती ! ये सड़क क्योंकि महत्वपूर्ण है सो कम महत्व की सडकों की घोर उपेक्षा कर भी इस पर ही काम होता है ! इसके महत्व को देखते यही वोट उगाहने का जरिया बनने वाली सड़क भी है ! सो इस पर खर्च किया सीधा फल दाई भी है .अत: इसके लिए पहाड़ की भूगर्भिक व भूगोल की उपेक्षा करनी पड़े या पर्यावरण मानकों की ऐसी तैसी भी करनी पड़े तो चलेगा ! क्योंकि जिन्हें भुगतना है वो भी मुगालता पाले हैं कि कष्ट तो दो चार रोज का ही है !

12 हजार करोड़ का गणित इसका एक और पहलू है ! और शायद सबसे महत्वपूर्ण पहलू है ! जिस रकम में एक पूरा नया वैकल्पिक आधुनिक मार्ग यात्रा पर्यटन व सेना के उपयोग के लिए बन सकता था उस रकम में बना बनाया मार्ग सिर्फ चौड़ा किया जा रहा है वो भी मानकों की परवाह किये बगैर तब सवाल तो उठता ही है ! ये किसका, किसके लिए मार्ग है ! जैसा कि लोक में प्रसिद्ध हो ही चुका है कि ये गडकरी का, गडकरी के लिए, गडकरी द्वारा बनाया जा रहा मार्ग है ..तो इसके पीछे सच भी है ही ! वर्ना क्या आफत कि भरी बरसात में जब ऊपर से मलवा गिर रहा है और खोदने से वो और गति से गिरना लाजमी है तब भी लगातार बगैर परिणाम की परवाह किये खोदना जारी है ! जिन प्राइवेट कम्पनियों को हाइवे अथार्टी आफ इंडिया के मार्फत निर्माण का ठेका दिए गये है उन पर भी मंत्री जी के नजदीकी होने के ही प्रचार हैं !

इस महत्वाकांक्षी योजना की गुणवत्ता पर सवाल उठे। जब जोशीमठ के नजदीक इस परियोजना के द्वारा एक दीवार बनाने के दौरान सीमेंट में मिटटी मिलाकर काम करने का मामला प्रकाश में आया ! एन जी टी की रोक के बाद आल वैदर की जगह चार धाम यात्रा परियोजना के नाम पर काम जारी रहा ! जबकि एन जी टी में मामला लम्बित है ! जहां अवैध तौर पर पेड़ काटने के सवाल के साथ ही डम्पिंग जोन ना होने पर सवाल उठा !जिस पर डम्पिंग जोन के खानापूर्ति के बोर्ड लगे पर मलवा सीधे नदी में ही अधिकाँश जगह डाला जाता रहा है ! बगैर पर्यावरण प्रभाव आंकलन रिपोर्ट व जन सुनवाई के ही परियोजना को मंजूरी दिए जाने पर भी सवाल उठा ! जिसका कोई जवाब नहीं है और काम, परियोजना का नाम बदलकर जारी है !

बगैर मानकों का पालन किये इस तरह के निर्माण पहाड़ के पर्यावरण व जीवन के लिए नुक्सानदायक होंगे ! पूर्व में विद्युत् परियोजनाओं के सन्दर्भ में ये सवाल हम उठाते रहे ! सरकारों ने कान नहीं दिया . जिसके परिणाम 2013 की आपदा के रूप में हमने देखा .जिसे पर्यावरणविदों से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक ने स्वीकारा कि जल विद्युत् परियोजनाओं की कार्यप्रणाली आपदा की विभीषिका को बढाने वाली थी ! आने वाले दिनों में आलवैदर के नाम पर किया जा रहा कटान व चौडीकरण बड़ी आपदा का सबब बनेगा ही ये कोई समान्य समझ से भी कह सकता है !

स्कूलों की कक्षा भी बंट जाए हिन्दू-मुसलमान में, क्या बचेगा हिन्दुस्तान में

रवीश कुमार

उत्तरी दिल्ली नगर निगम का एक स्कूल है, वज़ीराबाद गांव में. इस स्कूल में हिन्दू और मुसलमान छात्रों को अलग-अलग सेक्शन में बांट दिया गया है.

प्रतीकात्मक चित्र उत्तरी दिल्ली नगर निगम का एक स्कूल है, वज़ीराबाद गांव में. इस स्कूल में हिन्दू और मुसलमान छात्रों को अलग-अलग सेक्शन में बांट दिया गया है. इंडियन एक्सप्रेस की सुकृता बरुआ ने स्कूल की उपस्थिति पंजिका का अध्ययन कर बताया है कि पहली कक्षा के सेक्शन ए में 36 हिन्दू हैं. सेक्शन बी में 36 मुसलमान हैं. दूसरी कक्षा के सेक्शन ए में 47 हिन्दू हैं. सेक्शन बी में 26 मुसलमान और 15 हिन्दू हैं. सेक्शन सी में 40 मुसलमान. तीसरी कक्षा के सेक्शन ए में 40 हिन्दू हैं. सेक्शन बी में 23 हिन्दू और 11 मुसलमान. सेक्शन सी में 40 मुसलमान. सेक्शन डी में 14 हिन्दू और 23 मुसलमान. चौथी कक्षा के सेक्शन ए में 40 हिन्दू, सेक्शन बी में 19 हिन्दू और 13 मुस्लिम. सेक्शन सी में 35 मुसलमान. पांचवी कक्षा के सेक्शन ए में 45 हिन्दू, सेक्शन बी में 49 हिन्दू, सेक्शन सी में 39 मुस्लिम और 2 हिन्दू. सेक्शन डी में 47 मुस्लिम.

''अब आप इस स्कूल के टीचर इंचार्ज का बयान सुनिए. प्रिंसिपल का तबादला हो गया तो उनकी जगह स्कूल का प्रभार सी बी सहरावत के पास है. सेक्शन का बदलाव एक मानक प्रक्रिया है. सभी स्कूलों में होता है. यह प्रबंधन का फैसला था कि जो सबसे अच्छा हो किया जाए, ताकि शांति बनी रहे, अनुशासन हो और पढ़ने का अच्छा माहौल हो. बच्चों को धर्म का क्या पता, लेकिन वे दूसरी चीज़ों पर लड़ते हैं. कुछ बच्चे शाकाहारी हैं. इसलिए अंतर हो जाता है. हमें सभी शिक्षकों और छात्रों के हितों का ध्यान रखना होता है.''

क्या यह सफाई पर्याप्त है? इस लिहाज़ से धर्म ही नहीं, शाकाहारी और मांसाहारी के नाम पर बच्चों को बांट देना चाहिए. हम कहां तक बंटते चले जाएंगे, थोड़ा रुक कर सोच लीजिए. सुकृता बरुआ ने स्कूल में अन्य लोगों से बात की है. उनका कहना है कि जब से सहरावत जी आए हैं तभी से यह बंटवारा हुआ है. कुछ लोगों ने इसकी शिकायत भी की है, मगर लिखित रूप में कुछ नहीं दिया है. कुछ सेक्शन को साफ-साफ हिन्दू मुस्लिम में बांट दिया है. कुछ सेक्शन में दोनों समुदाय के बच्चे हैं. सोचिए, इतनी सी उम्र में ये बंटवारा... इस राजनीति से क्या आपका जीवन बेहतर हो रहा है?

राजनीति हमें लगातार बांट रही है. वह धर्म के नाम एकजुटता का हुंकार भरती है, मगर उसका मकसद वोट जुटाना होता है. एक किस्म की असुरक्षा पैदा करने के लिए यह सब किया जा रहा है. आप धर्म के नाम पर जब एकजुट होते हैं तो आप खुद को संविधान से मिले अधिकारों से अलग करते हैं. अपनी नागरिकता से अलग होते हैं. असली बंटवारा इस स्तर पर होता है. एक बार आप अपनी नागरिकता को इन धार्मिक तर्कों के हवाले कर देते हैं तो फिर आप पर इससे बनने वाली भीड़ का कब्ज़ा हो जाता है, जिस पर कानून का राज नहीं चलता. असहाय लोगों का समूह धर्म के नाम पर जमा होकर राष्ट्र का भला नहीं कर सकता है, धर्म का तो रहने दीजिए. आप ही बताइये कि क्या स्कूलों में इस तरह का बंटवारा होना चाहिए? बाकायदा ऐसा करने वाले शिक्षक की मानसिकता की मनोवैज्ञानिक जांच होनी चाहिए कि वह किन बातों से प्रभावित है. उसे ऐसा करने के लिए किस विचारधारा ने प्रभावित किया है.

राष्ट्रीयता किसी धर्म की बपौती नहीं होती है. उसका धर्म से कोई लेना-देना नहीं होता है. अगर धर्म में राष्ट्रीयता होती, नागरिकता होती तो फिर खुद को हिन्दू राष्ट्र का हिन्दू कहने वाले कभी भ्रष्ट ही नहीं होते. सब कुछ ईमानदारी से करते. जवाबदेही से करते. हिन्दू-हिन्दू या मुस्लिम-मुस्लिम करने के बाद भी नगरपालिका से लेकर तहसील तक के दफ्तरों में भ्रष्टाचार भी करते हैं. अस्पतालों में मरीज़ों को लूटते हैं. इन सवालों का हल धर्म से नहीं होगा. नागरिक अधिकारों से होगा. कोई अस्पताल लूट लेगा तो आप किसी धार्मिक संगठन के पास जाना चाहेंगे या कानून से मिले अधिकारों का उपयोग करना चाहेंगे. इसलिए हिन्दू संगठन हों या मुस्लिम संगठन उन्हें धार्मिक कार्यों के अलावा राजनीतिक स्पेस में आने देंगे तो यही हाल होगा. धर्म का रोल सिर्फ और सिर्फ व्यक्तिगत है, अगर है तो. इसके कारण नागरिक जीवन में नैतिकता नहीं आती है. नागरिक जीवन की नैतिकता संवैधानिक दायित्वों से आती है. कानून तोड़ने के ख़ौफ़ से आती है.

निशांत अग्रवाल का किस्सा जानते होंगे. ब्रह्मोस एयरस्पेस प्राइवेट लिमिटेड में सीनियर इंजीनियर हैं. ये जासूसी के आरोप में गिरफ्तार किए गए हैं. इन्हें पाकिस्तानी हैंडलर ने अमरीका में अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी का वादा किया गया था. जांच एजेंसियां पता लगा रही हैं कि इन्होंने ब्रह्मोस मिसाइल से जुड़ी जानकारियां सीमा पार के संगठन को तो नहीं दे दी हैं. अभी जांच हो रही है तो किसी निष्कर्ष पर पहुंचना ठीक नहीं है. मीडिया रिपोर्ट में छपा है कि अग्रवाल के कई फेसबुक अकांउट थे. जिस पर उन्होंने अपना प्रोफेशनल परिचय साझा किया था. हो सकता है कि पाकिस्तानी एजेंसियों ने फंसाने की कोशिश भी की हो.

कई लोगों ने लिखा कि अगर निशांत की जगह कोई मुसलमान होता तो अभी तक सोशल मीडिया में अभियान चल पड़ता. बहस होने लगती. एक तो मीडिया और सोशल मीडिया की ट्रायल करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है. उसमें भी अगर ये मीडिया ट्रायल सांप्रदायिक आधार पर होने लगे तो नतीजे कितने ख़तरनाक हो सकते हैं. हम अब जानने के लिए नहीं, राय बनाने के लिए सूचना का ग्रहण करते हैं. इसलिए डिबेट देखते हैं. जिसमें धारणाओं का मैच होता है. हमें रोज़ कुछ चाहिए जिससे हम अपनी धारणा को मज़बूत कर सकें. नतीजा यही हो रहा है. जो आपको स्कूल में दिखा और जो आपको निशांत के केस में दिखा.

एमजे अकबर के लिए अच्छी ख़बर है. पूरी सरकार उनके बचाव में चुप है. पार्टी प्रवक्ता चुप हैं. प्रधानमंत्री तो लग रहा है तीन चार दिनों से अख़बार ही नहीं पढ़े हैं. तभी मैं कहता हूं कि वो अकबर भी महान था और ये अकबर भी 'महान' हैं. विदेश राज्य मंत्री के रूप में जब वे विदेशों में जाएंगो तो क्या क्या बातें होंगी, इसकी चिन्ता किसी को नहीं है. आज के इंडियन एक्सप्रेस में पहली ख़बर एम जे अकबर की है. छह महिला पत्रकारों ने अकबर की कारस्तानी लिखी है. अकबर का बचाव आईटी सेल भी चुप होकर कर रहा है. अकबर ही लुटियन सिस्टम है. अकबर जैसे लोग कांग्रेस के राज में भी मलाई खाते हैं. भाजपा के राज में भी मलाई खाते हैं. सोचिए, बीजेपी के एक पुराने निष्ठावान नेता की जगह पर वे राज्यसभा का सांसद बने, मंत्री बन गए. एक कार्यकर्ता की बरसों की मेहनत खा गए. कांग्रेस ने भी वही किया. भाजपा ने भी वही किया.

आज बीजेपी और मोदी जी कांग्रेस राज में अकबर के किए गए कारनामे पर चुप हैं. जो अकबर राजीव गांधी का नाम जपता था वो अब मोदी नाम जप रहा है. कल मोदी के बारे में क्या बोलेगा, किसी को पता नहीं. एक बार गुजरात दंगों में मोदी के बारे में बोलकर पलट चुका है. मोदी भारत को बांट रहे हैं ऐसा कुछ लिखा था. उस अकबर का बचाव अगर मोदी कर रहे हैं तो अकबर वाकई 'महान' है. भक्तों को भी क्या क्या करना पड़ रहा है. अभी अभी एक अकबर को महानता के पद से उतारा था, दूसरा अकबर मिल गया, कंधे पर बिठाकर महान महान करने के लिए. वाकई भक्त भी अकबर हैं. मोदी जी को एक नया नारा देना चाहिए. अकबर बचाओ, अकबर बढ़ाओ. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा किसी काम का नहीं है.

भाजपा के केंद्रीय मंत्री इंटरव्यू के बाद शराब और हमबिस्तर होने का बनाते थे दबाव

ये उन दिनों की बात है जब भाजपा के केंद्रीय मंत्री एमजे अकबर संपादक हुआ करते थे और इंटरव्यू के बाद भोग—विलास थी उनकी प्राथमिकता।

जनज्वार

देशभर में चले MeToo कैंपेन ने कई दिग्गज हस्तियों, अभिनेताओं, नेताओं मंत्रियों—पत्रकारों को अपने लपेटे में ले लिया है। इसी कैंपेन में एक ख्यात महिला पत्रकार प्रिया रमानी ने पूर्व संपादक और मोदी सरकार के केंद्रीय मंत्री एमजे अकबर पर कई महिला पत्रकारों के हवाले से आरोप लगाया है कि कि वे होटल के कमरे में महिला पत्रकारों का इंटरव्यू लेते हुए उन्हें बिस्तर और शराब ऑफर करते थे। साथ ही प्रिया ने यह भी कहा है कि एमजे अकबर के शोषण की शिकार वह मुंबई के एक होटल में हुईं।

एक महिला पत्रकार ने हार्वे विन्सिटन्स ऑफ द वर्ल्ड नाम से लिखे पोस्ट में कहा था कि 'वह गंदे फोन कॉल, टेक्स्ट और असहज करने वाले कॉम्प्लेंट्स में माहिर हैं। आप जानते हैं कि कैसे चुटकी काटी जाए। थपथपाया जाए, जकड़ा जाए और हमला किया जाए। आपके खिलाफ बोलने की अब भी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। ज्यादातर युवा महिलाएं यह कीमत अदा नहीं कर सकतीं।' हालांकि जब यह पोस्ट लिखी गई थी तब एमजे अकबल का नाम सार्वजनिक नहीं किया गया था मगर अब MeToo कैंपेन के बाद इसे सरेआम कर दिया गया है।

प्रिया रमानी ने अपने ट्वीट में लिखा है, 'एमजे अकबर ने होटल रूम में इंटरव्यू के दौरान कई महिला पत्रकारों के साथ आपत्तिजनक हरकतें—छेड़खानी की है। मैं खुद भी उनकी अश्लील हरकतों की शिकार हुई हूं।' प्रिया रमानी के अलावा एक अन्य महिला पत्रकार ने कहा कि जब वह सीनियर जर्नलिस्ट थी तो एमजे अकबर होटल रूम में इंटरव्यू लेते और शराब—बिस्तर ऑफर करते।

Metoo कैंपेन का व्यापक असर होता दिख रहा है। हिंदुस्तान टाइम्स के ब्यूरो चीफ और पॉलिटिकल एडिटर प्रशांत झा पर एक महिला पत्रकार ने शोषण का आरोप लगाया था, जिसके दबाव में उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। अपना इस्तीफा हिंदुस्तान टाइम्स के संपादक को सौंपते हुए प्रशांत झा ने लिखा है, 'मेरे खिलाफ कई आरोप लगाए गए हैं। मेरे निजी आचरण के खिलाफ कई नैतिक सवाल उठाए गए हैं जिसके चलते मुझे लगता है कि मेरे लिए पद से इस्तीफा दे देना ही ठीक होगा।'

प्रशांत झा ही नहीं कई अन्य पत्रकारों पर भी साथी महिला पत्रकारों ने यौन शोषण के आरोप लगाए हैं। बेंगलुरु के मिरर नाउ अखबार की पूर्व पत्रकार संध्या मेनन ने टाइम्स ऑफ इंडिया के रेजिडेंट एडिटर केआर श्रीनिवास पर साल 2008 में यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था। संध्या ने एचआर से इसकी शिकायत भी थी, लेकिन कोई राहत नहीं मिली तो उन्होंने नौकरी छोड़ दी थी।

Metoo कैंपेन के तहत एक महिला ने मशहूर लेखक चेतन भगत के साथ बातचीत का स्क्रीनशॉट सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया, जिसके बाद लेखक चेतन भगत ने संबंधित महिला से सोशल मीडिया पर ही सार्वजनिक माफी मांगी। चेतन भगत के अलावा कॉमेडियन उत्सव चक्रबर्ती, एक्टर रजत कपूर भी यौन शोषण मसले पर माफी मांग चुके हैं। यौन शोषण मसले पर सस्द्धह्लश्रश कैंपेन की जद में आए एआईबी के दो फाउंडर्स मेंबर्स ने भी अपने पद से इस्तीफा दे दिया है।

गौरतलब है कि कुछ दिन पहले अभिनेत्री तनुश्री दत्ता ने मशहूर अभिनेता नाना पाटेकर पर यौन शोषण का आरोप लगाते हुए कहा था कि 2008 में 'हॉर्न ओके प्लीज' फिल्म के सेट पर नाना पाटेकर ने उनके साथ अश्लील हरकत की थी। यह मामला अभी मीडिया की सुर्खियों में है। नाना के अलावा ख्यात चरित्र अभिनेता यानी संस्कारी बाबू आलोक नाथ भी Metoo कैंपेन के लपेटे में आ गए हैं, उन पर भी यौन शोषण का आरोप लगाया गया है। 1993 में जी टीवी पर आने वाले लोकप्रिय सीरियल 'तारा' की लेखिका विनता नंदा ने कहा है कि आलोक नाथ ने उनका बलात्कार किया था।